The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 2 | Issue 4 | April 2024
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

रेवाड़ी के भित्ति चित्रों में धार्मिक चित्रण

डॉ० राजेश कुमार चौहान
शोध निर्देशक, दृश्य कला विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा

महेश कुमार
शोधार्थी, दृश्य कला विभाग
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक, हरियाणा

प्रागैतिहासिक काल से ही मानव शैलाश्रयों एवं गुफाओं में आकृति चित्रण करता आया है। इन्हीं से प्रेरणा पा कर सभ्य समाज के कलाकारों ने महलों, सरायों, गुम्बदों, मंदिरों, चौपालों व छतरियों में भित्ति चित्रों का कार्य किया है। जिसके आज भी प्रत्यक्ष दर्शन किए जा सकते हैं। समय के निरंतर गतिमान होने व मौसम के प्रभाव तथा कुछ सामाजिक तत्वों द्वारा आज इन भित्ति चित्रों का काफी हद तक नष्ट हो जाना स्वाभाविक है। अगर हम स्थानीय क्षेत्रो की बात करें तो हमें बहुत भारी संख्या में रेवाड़ी से भित्ति चित्रों की प्राप्ति हुई है। परंतु रेवाड़ी के भित्तिचित्रों की वास्तविक स्थिति आज यह है कि यह विरास्त धीरे–धीरे नष्ट होती जा रही है।

प्रस्तावना

भारत वर्ष में सर्वप्रथम भित्ति चित्रण का उदय जोगीमारा गुफा चित्रों से माना जाता है। इन्हीं से प्रेरणा प्राप्त कर रेवाड़ी में भित्ति चित्रों का सुंदर स्वरूप देखने को मिलता है। रेवाड़ी अपने आप में बहुआयामी प्रतिभाओं कवियों, इतिहासकारो, चित्रकारों, धार्मिक, स्थलों एवं प्राकृतिक सुंदरता से सरावोर दक्षिण हरियाणा का महत्वपूर्ण स्थान है। रेवाड़ी के राजा रेवत की पुत्री रेवती के नाम से रेवाड़ी शहर की स्थापना हुई है। दिल्ली के नजदीक होने के कारण रेवाड़ी पूरे मुग्ल शासन काल में सक्रिय रहा रेवाड़ी को अहीरवाल का लंदन कहा जाता है। अहीर जाति का बाहुल्प होने के कारण इसे शुरवीरों की धरती भी कहा जाता है। अहीर समाज भगवान श्री कृष्ण को अपना अराघय देवता मानते हैं। यही कारण है कि रेवाड़ी के पौराणिक भित्तिचित्रों में श्री कृष्ण की लीलाओं से संबंधित चित्र बड़ी संख्या में देखने को मिलते हैं।

मध्य युग में चित्रकला भी हरियाणा क्षेत्र में अधिक उन्नत दशा में नहीं थी पर मुग्ल काल में जब स्थिरता आयी तो इसमे जीवन के कुछ अंश पैदा हुए। रेवाड़ी के सोलाराही तालाब का निर्माण यदुवंशी राजा गंगाराम ने बनवाया क्योंकि रेवाड़ी में जलापूर्ति खारी होने के कारण तालाब के चारों ओर बने कुओं पर ही आश्रीत थे इस तालाब के पास सोलह रास्ते आकर मिलते थे इसलिए इसे सोलाराही तालाब कहा जाता है। तालाब के किनारे पर स्थित नेहरू पार्क में मुग्ल स्थापत्य का अद्भूत नमूना जिसे अब मंदिर का रूप दे दिया गया है। इसमें पांच गुंबद है तथा इन गुंबदों में बहुत ही सुंदर भित्तिचित्र बनाए गए हैं। कुछ चित्र नष्ट कर दिए गए हैं। तो कुछ आज भी अच्छी स्थिती में है। चित्रों पर शीर्षक लिखे गए है। जो उस समय रेवाड़ी की धार्मिक स्थिति और कला का अनुठा संगम प्रस्तुत करते हैं। रेवाड़ी की सीमाएं राजस्थान से मिलती है। ये साधारण सी बात है कि रेवाड़ी के भित्ति चित्रों के विषय और तकनीक राजस्थानी शैली से कुछ हद तक मिलते–जुलते हैं। किंतु राजस्थानी शैली का प्रभाव पूर्णतय स्पष्ट नही है।

उद्देश्य

रेवाड़ी (हरियाणा) के भित्तिचित्र की खोज की स्पष्ट सुचना देना। इन सभी चित्रों को बनाने की तकनीक व प्रयुक्त सामग्री की विस्तृत जानकारी उपलब्ध कराना। इनमें भित्ति, रंग और अन्य माध्यमों को प्रयोजन में लाया गया है तथा इन विषयों पर आधारित चित्रों का निर्माण किया गया है। इसके बारे में जानकारी सार्वजनिक रूप से साझा करना है।

शोध विधि

यह शोध की विशेष विधि द्वारा समृद्ध किया गया है। इसमें शोधार्थी ने रेवाड़ी (हरियाणा) शहर व उसके अंतर्गत आने वाले गांव में जाकर इन सभी भित्तिचित्रों का मूल्यांकन किया है तथा सभी भित्तिचित्रों की फोटोग्राफी स्वयं शोधार्थी द्वारा की गयी है। इसके अतिरिक्त विभिन्न पुस्तकों, वेबसाईट, शोध पत्रिकाओं का अध्ययन करके इस शोध को संपन्न किया है।

भित्ति चित्रण तकनीक

हरियाणा की दक्षिणी तथा पश्चिमी सीमाएं राजस्थान से सटी हुई है तथा रेवाड़ी शुष्क जलवायु एवं जमीन का क्षेत्र है इसलिए बरसाती पानी को इकट्ठा करने के लिए सोलाराही तालाब और बड़ा तालाब का निर्माण किया गया था। वास्तुकला की दृष्टि से रेवाड़ी के पौराणिक भवनों तथा तालाबों की

दीवारें भारी भरखम और मजबूत हैं। ये दीवारें पहाड़ी बड़े पत्थरों तथा पजावडी ईटों (6''× 4') छोटी–छोटी इंटों से बनाए गए हैं। फिर दिवार पर केकरीट व चुने से लिपाई की गई है। इस भित्ति में कंकरीट के साथ हरियाणा में पाई जाने वाली सफेद बेढ़गी बजरी (बिछुआ कांकर) तथा अलसी के बीजों का प्रयोग किया गया है। अलसी कृमि नाशक व मजबूत बंधक के रूप में प्रयोग लाई जाती है। यही कारण है कि आज भी भित्तिचित्र अच्छी अवस्था में पाए जाते हैं। चुने और कंकरीट को गुरमाले से समतल करके ऊपर से सफेद बारीक चुने की तीन से चार परते चढ़ाई गई है तथा टेम्परा विधि से चित्रण किया गया है।

टेम्परा पद्धति से चित्रण

टेम्परा माध्यम में जल से घुलने वाले पदार्थ जैसे– सुरेश, गोंद, शहर, शक्कर एवं गुड अन्य पदार्थों को प्रयोग किया जाता है। इसलिए टेम्परा चित्रण विधि के लिए वनस्पति, खनिज एवं रसायनिक रंगों के सारे पदार्थ उत्तम होते हैं। टेम्परा चित्रण में हर प्रकार के रंगों का प्रयोग किया गया है। इनमें नीला रंग बनाने में विशेष सावधानी रखी जाती थी क्योंकि अंडे की जर्दी के पीले रंग से नीला रंग हरा हो जाता था जबकि सरेश तथा बवुल की गोद रंगत एवं चमक को प्रभावित नहीं करती थी इसलिए रेवाड़ी के भित्तिचित्रों में रंग सुन्दर व सुस्पष्ट दिखाई देते हैं। रेवाड़ी के भित्तिचित्रों रामायण, महाभारत, राधा–कृष्ण, पशु–पक्षियों एवं अन्य पौराणिक कलाओं से संबंधित घटनाओं को प्रमुख रूप से चित्रण किया गया है।

दूध मथंन लीला

यह चित्र रेवाड़ी के सोलाहराही तालाब के साथ नेहरू पार्क में बने मन्दिर से लिया गया है। स्थापत्य की दृष्टि से यह मन्दिर मुग्ल स्थापत्य की अद्भुत रचना है। इस दृश्य में भगवान श्री कृष्ण की बालपन की लीला को चित्रित किया गया है। इतिहास और पौराणिक कथाओं में कृष्ण का व्यक्तित्व यथार्थ में बहुमुखी था। भारतीय सभ्यता के लम्बे इतिहास में वास्तव में ऐसा कोई वीर पुरुष या संस्कृति का निर्माणकर्ता नहीं है। इस दृश्य में माता यशोदा दुध दोहन कर माखन निकालने में कार्यरत है। और श्री कृष्ण मटकी से माखन निकाल कर खा रहे है। वहीं दो स्त्रियाँ यह देखकर एक–दूसरे से वार्तालाप करती दिखाइ दे रही है। चित्रकार ने चित्रों का शीर्षक उर्दू व हिंदी में दोनों ओर लिखा है। पृष्ठभूमि सफेद है तथा चित्र में चटक नीला, नीला व मटके को गैरिक (ब्बीतम) रंग के साथ चित्रित किया है तथा सभी रेखाएं काले रंग से बनाई गई है। चित्र में श्री कृष्ण के सिर पर मोर मुकुट, गले में मोतियों की माला बाजुबंद व पैरों में आभुषण पहने दिखाया गया है। स्त्री को स्पष्ट रेखाओं वाला घाघरा, चोली तथा सभी आभुषणों से सुसज्जीत कर चित्रण किया गया है। आकाश को नीले रंग की सीधी रेखाओं से दर्शाया गया है। चित्र में आंखों का चित्रण अपभंश शैली चित्रों के समान बनाया गया है। चित्र में तीनों स्त्रियों के घाघरों का रंग गैरिक, नीला व चटक नीला है। तथा खिलोनों की तरह अलंकरण किया गया है। तथा बाहरी रेखाएं काली स्याही से कलम हार बनाई है।

वैद लीला कृहम

इस चित्र में वैद्य द्वारा बिमार छोटी बालिका की नाड़ी देख कर बिमारी का कारण ज्ञात किया जा रहा है अर्थात् बिमारी का परिक्षण किया जा रहा है जैसा कि आयुर्वेद में किया जाता है। इस दृश्य में

मुख्यत पांच स्त्रियों तथा एक पुरुष जो कि वैद्य है। इस चित्र में बालिका की माता को अन्य दासियों व वैद्य से बड़े आकार में बनाया गया है तथा बालिका अपनी मां के साथ एक चददर पर बैठी है। चित्र में गैरिक, नीला व चटक नीले रंग का प्रयोग किया गया है। स्त्रीयां मोतियों की माला, बाजुबंध, चुड़ियों एवं पैरों में पायल पहने हुए है। वेद बालिका के हाथ को पकड़े हुए है। सिर पर टोपी तथा अपने कंधे पर दवाओं की पोटली लिये हुए है। सभी स्त्रियों के चेहरे पर घबराहट स्पष्ट नजर आ रही है। एक स्त्री पंखा डुला रही है। तथा आकाश नीले रंग से चित्रित किया गया है।

गोवर्धनधारी श्री कृष्ण

इस दृश्य में भगवान श्रीकृष्ण को अपनी उंगली पर गोवर्धन पर्वत को उठाये दिखाया गया हैं। भगवान श्रीकृष्ण को मोर मुकुट व चतुर्भज रूप में बांसुरी बजाते एक हाथ से पर्वत तथा दूसरे हाथ में पुष्प लिए चित्रित किया गया है। चार अन्य पुरुषों को काले रंग की रेखाओं से जो छाती व सिर पर एक लंबां लंबादा तथा हाथ में लाठीयां लिए हुए है तथा कृष्ण के पीछे गांय को चित्रित किया गया है। अंगवस्त्र तथा गले में मोतियों की माला तथा अन्य आभूषणों से सुसज्जीत श्रीकृष्ण को चित्रित किया गया है। पर्वत को किसी मन्त्र की सहायता से तथा आकाश को नीला दर्शाया गया है। अंगवस्त्र चटक नीले तथा काली स्याही द्वारा बाह्य रेखाएँ काले रंग से बनाई गई हैं।

निष्कर्ष

रेवाड़ी (हरियाणा) में पौराणिक कलाओं के आधार पर भित्तिचित्रण हुआ है। मुख्य रूप से श्री कृष्ण लीलाओं पर अधिक कार्य किया गया है। इसका मुख्य कारण रेवाड़ी में यदुवंशी समाज का बाहुल्य क्षेत्र का होना है। चित्रों को हम पूर्णरूप से राजस्थानी शैली पर आधारित नही कह सकते हैं। मुख्य

रूप से एक चश्म चेहरों का चित्रण तथा गहरे नीले, चटक नीले, गैरिक (ब्बीतम) तथा चित्रों की बाहरी रेखाएँ काले रंग की बनायी गयी है। इन दिवारों पर बने चित्रों ने धूल, मिट्टी व नमी का सामना करते हुए अपनी मजबूती को खो दिया है। आज इन चित्रों की दशा बहुत बुरी है। बहुत से असामाजिक तत्वों ने बहुत सारे चित्रों को पूर्णरूप से नष्ट कर दिया है, जैसा कि हम सभी जानते हैं कि राजस्थानी शैली का जन्म अपभ्रंश तथा पहाड़ी शैली के प्रभाव से हुआ है इसलिए हमें रेवाड़ी जिलों के भित्तिचित्रों में पूर्णरूप से राजस्थानी शैली की झलक नहीं मिलती है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. हरियाणा का इतिहास, आदिकाल से 1966 तक, यादव डॉ० के० सी० द्वितीय संस्करण 2013
2. प्रताप, रीता (वैश्व), ''भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास'', राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 19वां संस्करण 2015
3. सिंह डॉ० रीटा, 'छटक्ण्ज्ळज नर्वापद विद्यालय समिती कला', अरिहन्त पब्लिकेशन (इण्डिया) लिमिटेड
4. भारती, मीनाक्षी कासलीवाल, भारतीय मूर्तिशिल्प एवं स्वरूप कला, राजस्थान, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, सातवां संस्करण
5. देशवाल डॉ० सन्तराम, हरियाणा की कला, हरियाणा : संस्कृति एवं कला
6. हरियाणा की लोक–कलाएं, 1993 शर्मा डॉ० विश्वबन्धु, अभिनव प्रकाशन, 4424, नई दिल्ली
7. भारतीय कला का विकास, राधाकमल मुकर्जी, सरस्वती प्रेस, इलाहाबाद, वाराणसी, दिल्ली

मध्य भारत की चित्र एवं मूर्तिकला, डॉ० राजेन्द्र प्रसाद, राजन, प्रथम संस्करण, 2015